कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) ......

(In Words) ......

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ......

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय ....चित्रकला....

परीक्षा का दिन ....शनिवार....

दिनांक ....30-3-19....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक ☐☐☐☐☐☐

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(1) "सलीम का जन्म" चित्र केशु ने चित्रित किया। यह चित्रकार अकबरकालीन का है।

(2) मीर सैयद अली ने लैला मजनू का तथा अपने पिता का व्यक्ति चित्र बनाया

(4) 'रावण और जटायु' का चित्र राजा रवि वर्मा ने चित्रित किया।

(5) 'दिल्ली शिल्पी चक्र समूह' की स्थापना 25 मार्च 1949 को बी. सी सान्याल तथा धनराज भगत ने की।

(6) 'फूल बेचने वाली' नामक कृति ~~श्रीधर~~ नारायण श्रीधर बेन्द्रे की है।

(7) ए. रामचन्द्रन के 'आकर्षक चित्र' कमल सरोवर है।

(8) पनघट, साधु, हाट बाजार आदि चित्र के. के. हेब्बर ने चित्रित किए।

(9) भूर सिंह शेखावत ने पानी भरते, खाना पकाते हुए, सूत कातते आदि चित्रों को चित्रित किया।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(10) मोर का चितेरा देवकीनन्दन शर्मा को कहा गया है।

(11) मिल - कॉल नामक मूर्तिशिल्प रामकिंकर बैज ने बनाया।

(12) शंखो चौधरी ने रायलेट तथा पक्षी नामक कांस्य धातु की मूर्तिशिल्प की रचना की।

(13) विमलशाही मंदिर का निर्माण गुजरात के सोलंकी शासक के राजा भीमदेव प्रथम ने अपने मंत्री विमलशाही से 1031 ई. मे करवाया था। यह मंदिर राजस्थान के सिरोही जिले के माउण्ट आबू से 2 km देलवाड़ा मे स्थित है।

(14) कलकत्ता कला समूह की स्थापना 1943 को प्रदोष दास गुप्ता तथा निरोद मजूमदार ने की।

(15) पेग (प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप) मे आरा और सूजा भी दो कलाकार थे।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(16) राजस्थान के पद्मश्री सम्मान से सम्मानित स्व. रामगोपाल ~~विज~~ विजयवर्गीय तथा कृपाल सिंह शेखावत चित्रकार है।

(17) देवी प्रसाद राय चौधरी के दो प्रसिद्ध मूर्तिशिल्प है।

(i) शहीद स्मारक :- ~~यह~~ इस मूर्तिशिल्प की स्थापना 1956 मे देवी प्रसाद राय चौधरी ने पटना सचिवालय भवन के बाहर की। यह मूर्तिशिल्प अंग्रेजो की क्रूरता को दर्शाता है। भारतीय आन्दोलन के समय अंग्रेजो ने देश भक्तो पर गोली चलाई थी। इस मूर्तिशिल्प मे सात युवको घायल अवस्था तथा देश भक्ति से भरित दर्शाया है। यह मूर्तिशिल्प 11 अगस्त 1942 की घटना है ~~जो~~ जब देश भक्त युवा राष्ट्र ध्वज फेहराने पटना सचिवालय की तरफ बढ़े तब अंग्रेजो ने गोलिया चला दी।

(ii) श्रम की विजय :- यह मूर्तिशिल्प 1958 को चैन्नई के समुद्र तट के किनारे स्थापित की गई! इस मूर्तिशिल्प मे श्रम से किसी भी बाधा को हल किया जा सकता है दर्शाया गया है!

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18) द्वारका प्रसाद शर्मा का जन्म 1922 ई. मे बीकानेर मे हुआ है। इनका रेखांकन तथा पेचवर्क मे हाथ सधा हुआ है। इन्हे घोडे के चित्र बनाना अत्यन्त प्रिय है। घोडे मे लय गति देखते ही बनती है।

(19) राम जैसवाल को प्रकृति चितेरा भी कहते है क्योकि ये अपने चित्रो मे अधिकतर प्रकृति का चित्र करते है। राम जैसवाल के प्रमुख चित्र वियोगी शिव तथा बंदी है। वर्षा, प्रणय, आंगन की दोपहरी आदि चित्र है।

(20) स्व गोपीचन्द मिश्र के मूर्तिशिल्पो मे माँ और शिशु तथा यह बोझ नही मेरा भाई है। नाम मूर्तिशिल्प है। माँ और शिशु मूर्तिशिल्प मे माँ की ममता तथा बच्चे चंचलता को दर्शाया गया है। ये दोनो मूर्तिशिल्प राजस्थान ललित कला अकादमी से पुरस्कृत है।

(21) कम्पनी शैली के प्रमुख केन्द्र :- पटना।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मुर्शिदाबाद, कोलकता आदि है।

कम्पनी शैली के चित्रकार :- थॉमस विलियम, विलियम होजेज, विलियम डेनियल, एमिली ईडन, बल्थाजार सोमिन्स, रामलाल, गोविन्द, शिवदास, शंकर आदि चित्रकार है।

(23) मृणालिनी मुखर्जी के मूर्तिशिल्प वन राजा (1991-94) पुष्प (1975) पुरुष (1980) स्त्री (1981) वाटर फॉल (1991). लोटं एण्ड पाण्ड I and VIII (1991-1995), पाम स्केप (2015)

प्रमुख मूर्तिशिल्प मे पाम स्केप तथा वन राजा है।

पाम स्केप :- यह मूर्तिशिल्प ताड के वृक्ष की सूखी पत्ती से समन्धीत है। इसमे कास्य धातु का प्रयोग हुआ है।

वन राजा :- इस मूर्तिशिल्प मे वन के राजा को खडी अवस्था मे दर्शाया गया है। इसमे प्राकृतिक रेशो का प्रयोग किया है।

(25) ऊषा रानी हूजा का जन्म 18 मई 1933 को जयपुर मे हुआ। इन्होने अपनी कर्मस्थली जयपुर को ही बनाया। इन्होने कला की शिक्षा लंदन

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मे रिजेन्ट स्ट्रीट पॉलीटेक्निक कॉलेज मे ली। लंदन कला शिक्षा लेते समय इनके चित्र पाश्चात्य शैली के चित्रकार हेनरी मूर तथा एप्स्टीन मूलाल का प्रभाव पड़ा। इनके मूर्तिशिल्प सिसन्धे स्कॉलर, घूमर, श्रमिक, माइन्र्स मॉन्युमेंट है।

(25) चौमुखा मंदिर की स्थापना 1438 मे हुई। यह मन्दिर अपनी स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। यह मन्दिर 45800 वर्गफीट पर फैला हुआ है, यह मन्दिर सोमसुन्दर सूरीजी की प्रेणा से धनाशाह तथा रानाशाह ने करवाया था। जो शिल्पी देवा के निर्देशन मे 1459 मे पुरा हुआ। इस मन्दिर को विहार भवन, खंभो का अजायबघर, त्रिलोकी दिपक, चौमुखा मन्दिर कहते है। इस मन्दिर मे 85 मण्डप 84 महामण्डप तथा 1444 स्तंभ है।

(21) 14 वी सदी मे दक्षिण के दो राज्य महत्वपूर्ण थे। विजयनगर और बहमनी सल्तनत। 1336 मे विजयपुर तथा 1347 मे बहमनी सामाज्य की स्थापना हुई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विजयनगर की स्थापना हरिहर व बुक्का नामक दो भाई ने की। विजयनगर का विस्तार कृष्णा से कावेरी तथा बंगाल की खाडी से अरब सागर तक है। इसका राजा कृष्ण देव थे।

जिस प्रकार विजयनगर की स्थापना हुई उसी प्रकार बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई। बहमनी साम्राज्य का नाम अलाउद्दीन बहमन शाह के कारण बहमनी सल्तनत पडा। बहमनी साम्राज्य मे उस समय जो कला विकसित हुई वह दक्षिणी कला कहलाई। कालान्तर मे यह साम्राज्य पांच भागो मे बट गया - अहमदनगर, बिजापुर, गोलकुण्डा, बीदर, बरार।

उ० (ii) अवीनन्द्रनाथ ठाकुर का प्रारंभिक जीवन :- अवीनन्द्र नाथ ठाकुर ने भारतीय कला आन्दोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होने 'बंगाल शैली' को जन्म दिया। इनका जन्म 1871 ई. मे बंगाल मे जोरासाकु मे ठाकुर परिवार मे हुआ। इनके पिता गुणेन्द्रनाथ दादा गिरीनन्द्रनाथ तथा चाचाओ ज्योतिनन्द्र तथा रवीन्द्रनाथ संगीतज्ञ तथा कलाकारो से कला की प्रेरणा ली।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इन्होंने अपनी कला शिक्षा इटालियन के कलाकार गिलहार्डी तथा यूरोप के पामर से ली।

(ii) माध्यमो मे चित्रांकन :- अबनीन्द्रनाथ ठाकुर के मे जापान के से ताइकान तथा हिसिदा ठाकुर परिवार मे मेहमान आए थे जिनसे उन्होंने जापानी वॉश पद्धती सिखी। इस पद्धती मे बनाए चित्र उमरख्याम तथा गणेश पुजा है।

(iii) कला संस्थान की स्थापना :- अबनीन्द्रनाथ ठाकुर तथा उनके बडे भाई गगेनन्द्रनाथ के साथ मिलकर इण्डियन सोसाइटी ओरिन्टल आर्ट की स्थापना 1907 मे की।

(iv) प्रमुख विषयो पर चित्र :- अबनीनन्द्रनाथ ठाकुर ने अने विषयो पर चित्र बनाए। भारतीय पौराणिक तथा धार्मिक चित्रो मे राम और सिता बुद्ध व सुजात, रामायण, गणेश पुजा आदि है।

दैनिक जीवन पर आधारित चित्र 'सुर्यपुजा', कजरी, आदि है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने 1905 मे भारत माता का चित्र बनाया ! जिसमे भारत माता को चर्तुभुज दर्शाया है ! यह चित्र अत्यन्त मनमोहक तथा देश भक्ति से प्रेरित है !

शाहजहाँ, नूरजहाँ, ताज आफ आर्ट, औरंगजेब आदि चित्र भी बनाए है ! अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने चाचा के "विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर का महाप्रयाणम" के बाद अपनी तूलिका को त्याग दिया !

(vii) मेवाड शैली :- मेवाड शैली की उपशैलिया उदयपुर, नाथद्वारा, उमाणिया है ! मेवाड शैली का स्वर्णकाल महाराणा जगतसिंह तथा राजसिंह का है ! उदयपुर की स्थापना उदयसिंह (1532-1675) ने की ! मेवाड शैली के चित्रो मे भागवत पुराण शाहबुद्दीन द्वारा 1648 मे चित्र किया गया साथ ही मनोहर द्वारा गीत गोविन्द, सूर सागर और रामायण चित्रित किया गया ! मेवाड शैली मे पिछवाई पेंटिंग राजसिंह के समय हुई ! 1655 मे शाहबुद्दीन द्वारा भ्रमरगीत की रचना की गई !

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मेवाड शैली की विशेषता

(i) स्त्री आकृति :- मेवाड शैली मे स्त्री के देह का सुन्दर चित्रण हुआ है! उनकी आंखे मीनाकृति छोटी नाक तथा पिछे की ओर ढला हुआ ललाट, उन्नत चिबुक, कपोलो पर झूलते केश के साथ चित्रित किया है!

(ii) पुरुषआकृति :- मेवाड शैली मे पुरुषो को लम्बा तथा हस्त पुष्ट चित्रित किया है! पुरुषाकृति मे नाक छोटी छोटी चिबुक, हस्ट-पुष्ट भुजाए, आंखे लम्बी तथा पिछे की ओर ढला ललाट सभी सांचे मे ढाला हुआ चित्रित किया है।

(iii) वस्त्राआभूषण :- स्त्रीयो को धोती कंचुकी तथा पारदर्शी ओढनी ओढ तथा गले मे हार, कानो मे कुण्डल हाथो मे बाजूबन्द पहने चित्रित किया है! वही पुरुषो को लम्बा जामा तथा पायजामा कमर पर पटका तथा मेवाडी पगडी चित्रित किया है!

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iv) रंग :- मेवाड शैली मे चमकदार तथा चटकीले रंगो का प्रयोग किया गया है। मुगल प्रभाव के कारण हाशिए लम्बे हैं।

(v) विषय :- मेवाड शैली मे धार्मिक तथा साहित्य पर आधारित विषय बनाए हैं जिनमे राग-रागनी, नायक-नायिका भेद, भागवत पुराण, गीत गोविन्द, षड्ऋतु, बारहमासा, साथ ही दृश्य तथा व्यक्ति चित्रण भी हुआ है।

(vi) प्रकृति :- मेवाड शैली मे प्राकृतिक दृश्य व क्षितीज का आकिषक चित्रण हुआ है। पशु पक्षियो के चित्रण मे शेर, चीता, मोर, हंस आदि का चित्रण हुआ है। वनो को सघन तथा लताओ से लिपटे चित्रित किया है।

(vii) चित्रकार :- मेवाड शैली के चित्रकार मे शाहबुद्दीन, निसारुद्दीन, मनोहर, गोविन्द, रामलाल आदि हैं।

(Q7) महाबलीपुरम :- यह मद्रास मे स्थित है। महाबलीपुरम मे सातवी सदी के मन्दिर देखने को मिलते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

जो स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्व रखते है। महाबलि पुरम मे पल्लवकालीन वंश का शासक रहा था। महाबलिपुरम मंदिर की प्रमुख केन्द्र कांची है। यहा पर पल्लवकालीन वंश महेन्द्र वर्मन तथा नृसिंह वर्मन का शासक रहा था। महाबलिपुरम के मंदिरो मे सप्तरथ, वराह मंदिर, गंगावतरण दुर्गा मन्दिर प्रमुख है।

गंगावतरण मंन्दिर :- इसमे पाषाण के विशाल भाग को काटकर गंगावतरण को दर्शाया है। इसे तीर्थम के नाम से जाना जाता है। जिसे भागीरथ तपस्या कहते है।

वराह मंदिर मे भगवान विष्णु को दशावतरण मे दर्शाया गया है। साथ ही राजा महेन्द्र वर्मा को रानियो के साथ उत्कीर्ण किया है।

(3) किसान, नौकर, दरबान, रसोइया आदि चित्र कम्पनी शैली से सम्बन्धित है।

(28) पहाडी चित्र शैली की विशेषताए

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(i) हाशिए :- पहाडी शैली मे हाशिए सपाट तथा पतलीनुमा तथा पट्टीनुमा बनाए गए है! हाशियो मे सपाट रंग का प्रयोग हुआ कभी कभार लाल पीले रंगो का प्रयोग हुआ है। जबकि मुगल शैली मे हाशिए चौडे है!

(ii) रंग योजना :- पहाडी शैली मे रंगो चमकदार तथा हल्के रंगो का प्रयोग हुआ है!

(iii) भवन :- पहाडी शैली मे भवनो का निर्माण तीमंजिला तथा दो मंजिला है! भवनो मे आले भी बनाए गए है! भवनो का रंग सफेद है!

(iv) विषय :- पहाडी शैली मे राधा कृष्ण आधारित चित्रो तथा नायक - नायिका के विषय पर चित्र बनाए है! साथ ही बारहमासा, ऋतु वर्णन, गीत गोविन्द, आदि विषय चित्र बनाए!

26 (क) अकबरकालीन विषय :- (i) भारतीय पर आधारित :- रामायण रज्मनामा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

पंचमल आदि

(ii) अभारतीय पर आधारित :- हुमायूनामा आदि

(iii) ऐतिहासिक पर आधारित :- तैमुरनामा (तैमुर का इतिहास) बाबरनामा (बाबर का इतिहास)

(iv) व्यक्ति चित्र तथा सामाजिक विषय के चित्र बनाए

(ख) जहागीरकालीन विषय :- (i) शिकार पर आधारित

(ii) पक्षीयो तथा पशुओ

(iii) प्राकृतिक चित्रण के विषय बनाए।

(ग) शाहजहा कालीन विषय :- शाहजाहा ने वास्तुकला तथा स्थापत्य कला का विकास किया शाहजहा के समय केवल व्यक्ति तथा दरबारी चित्र बने। वास्तु कला का उदाहरण ताजमहल है।

समाप्त